Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.2, February, 2025

"गङ्गा, एक पवित्र धारणा"

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष-संस्कृत विभाग
ने.मे.शि.ना.दास (पी.जी.) कॉलेज,बदायूँ

****

शोध सार

भगवती गङ्गा भारतीय संस्कृति, धर्म और जीवन-दर्शन में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। श्रीमद्भगवद्गीता, पुराणों और वैदिक साहित्य में गङ्गा की पवित्रता, माहात्म्य तथा उनके जल के दिव्य गुणों का वर्णन किया गया है। गङ्गा न केवल पापनाशिनी और मोक्षदायिनी हैं, बल्कि भारतीय जन-जीवन की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर भी हैं। विभिन्न शास्त्रों में गङ्गा के नाम, उनकी उत्पत्ति, महिमा और उनकी रक्षा के नियमों का विस्तार से उल्लेख हुआ है। गङ्गाजल का स्पर्श, दर्शन, स्नान और पान करने से अनेक पुण्यों की प्राप्ति होती है तथा जीवन के सभी कष्टों का निवारण होता है। अतः गङ्गा की अविरलता एवं पवित्रता बनाए रखना हमारा नैतिक दायित्व है। गङ्गा केवल एक नदी नहीं, अपितु माँ स्वरूपा देवी हैं जिनकी आराधना से भक्तों को सांसारिक और पारलौकिक सुख की प्राप्ति होती है। तीर्थराज प्रयाग, हरिद्वार, काशी और गंगासागर जैसे तीर्थस्थल गङ्गा की महिमा को और भी समृद्ध बनाते हैं।

मुख्य शब्द : *गङ्गा, पवित्रता, मोक्ष, पापनाशिनी, भारतीय संस्कृति, धर्मशास्त्र,*

****

श्रीमद्भगवद्गीता सभी पदार्थों में स्वाभिधानत्व बताते हुए लीला-पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं,"**स्रोतसामस्मि जाह्नवी" (श्रीमद्भगवद्गीता-10/31)।** अर्थात् **"मैं नदियों में गङ्गा हूँ।"** 'गङ्गा' शब्द के उच्चारण और श्रवणमात्र से अन्तःकरण एक सहज और नैसर्गिक प्रसन्नता से भर जाता है। भारतीय जन-जीवन के साक्षी स्तम्भ-चतुष्टय **(गौ, गङ्गा, गायत्री और गीता)** भगवती गङ्गा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भारत और भारतीयों की हृदय-धमनी-स्वरूपा भागीरथी गङ्गा अपनी निर्मल एवं अविरल धारा से भारत-भूमि को चिरकाल से सस्य-श्यामला किए हुए हैं। स्कन्दपुराण में कृष्ण द्वैपायन महर्षि वेदव्यास ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि, "**जिन कुछ कारणों से भारत-भूमि अपने को धन्य मानती है, उनमें से एक गङ्गा का भी महत्वपूर्ण योगदान है।**" देखिए-

"तत्र गच्छ महाभागे! सद्यश्चात्मविशुद्धये।
ब्रह्मणेति समाख्यातं श्रुत्वा गङ्गा सरिद्वरा।।"
(स्कन्दपुराण, अवन्तिखण्ड-5/15)

महाकवि कालिदास ने अपनी अमर-कृति **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** के मङ्गलाचरण में **"या सृष्टिः स्रष्टुराद्या"** से जि प्रथम (जल) सृष्टि का उद्घोष किया, उसका सबसे पवित्रतम रूप धारण करने भगवती गङ्गा चिरकाल से पतित-पावनी बनी हुई हैं। भगवती गङ्गा में स्नान करना तो पुण्यप्रद है ही, साथ ही उनका दर्शन भी मुक्ति का पथ प्रशस्त कर देता है। और इसीलिए एक बड़ी प्रचलित सी उक्ति चल पड़ी-"**गङ्गे! तव दर्शनात् मुक्तिः।**" पर्वतराज हिमालय की कोख को पवित्र करने वाली यह पतित-पावनी गङ्गा हमारी प्राकृतिक धरोहर और सम्पूर्ण मानव-सृष्टि के लिए वरदान स्वरूप हैं। अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध विद्वान् एवं शायर श्रीरघुपति सहाय फ़िराक़ ने भगवती गङ्गा का गुणगान कुछ इस प्रकार किया है-

"तहज़ीब की पहली सुबह की पाक दुआयें,
डूबी हुई हैं फिज़ा में ऋषियों की सदायें।

ऐ गंगा जमुन की गुनगुनाती लहरें,
देती हैं सुनाई तुममें वेदों की ऋचायें।।"

जन्म से लेकर मृत्यु-पर्यन्त मानव जीवन के प्रत्येक आयाम में किसी न किसी प्रकार से गङ्गा की अनिवार्यता बनी ही रहती है। भगवती गङ्गा सम्पूर्ण मङ्गलों और सिद्धियों की सहज दात्री हैं। उनकी इसी सर्वमङ्गलमङ्गल्यता से अभिभूत होकर गोस्वामी तुलसीदासजी कह रहे हैं-

"गंग सकल मुद मंगल मूला।
सब सुख करनि हरनि सब सूला।।
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा।
राम बिलोकहि गंग तरंगा।।"
(रा.च.मा. अयो. ण्ड)

पुण्य सलिला जीवन-दायिनी भगवती जाह्नवी का वैभव अपार है। उत्तर भारत की वृहद् उर्वर भूमि भगवती भागीरथी के अहेतुकी कृपा की चिर ऋणी है। अतः हमारा भी यह सहज उत्तरदायित्व है कि माँ गङ्गा को अविरल एवं पवित्र बनाए रखने में अपने सार्थक एवं सत्प्रयासों की कुछ आहुतियाँ अवश्य डालें। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित आचार-दर्शन इस विषय में सदैव हमारी सहायता करते हैं। ब्रह्मपुराण में स्पष्ट उल्लेख है कि, **"गङ्गा में गन्दगी करना, कुल्ला करना, पूजन का निर्माल्य फेंकना, मैल धोना, जल-क्रीडा करना, रति-क्रीडा करना, दान लेना, दूसरे तीर्थों की प्रशंसा करना, कपड़े त्यागना, जल पर प्रहार करना, झूठ बोलना, आदि चौदह कार्य निषिद्ध हैं।** देखिए-

"गङ्गा-पुण्यजलं प्राप्य चतुर्दश-विवर्जयेत्।
शौचमाचमनं केशनिर्माल्यं मलघर्षणम्।।
गात्रसंवहनं क्रीडा प्रतिग्रहमथो रतिम्।

अन्यतीर्थरतिं चैव अन्यतीर्थप्रशंसनम्।।
वस्त्रत्यागमथाघातं संतारं च विशेषतः।
नाभ्यङ्गितः प्रतिसेच्च गङ्गायां न मलार्जितः।।
न जल्पनं न मृषा विच्छन्न च वदन्ननृतं नरः।।"

(ब्रह्मपुराण-अध्याय 1, श्लोक 535) उपर्युक्त चौदह कर्मों में से सात कर्म साक्षात् जल-प्रदूषण से सम्बन्धित हैं। धर्मशास्त्र के अनुसार इनका निषेध करने मात्र से गङ्गा की पावनता निश्चप्रच बनी रहेगी। भगवती गङ्गा को पवित्र बनाए रखने का प्रत्येक उपाय स्वतः ही धर्म स्वरूप है। सुर-सरिता भगवती भागीरथी का माहात्म्य ही कुछ ऐसा है कि नाम-श्रवण मात्र से ही अन्तःकरण में एक नैसर्गिक पवित्रता एवं भक्ति का भाव स्वतः उत्पन्न हो जाता है। पद्मपुराण में भगवती गङ्गा के वैभव का बखान करते हुए कहा गया उनके माहात्म्य का विधिवत् वर्णन किया गया है। भगवान् शिव के दिव्य मस्तक से होकर सुदूर सागर तक का मार्ग तय करने वाली गङ्गा समस्त पापों को हरने वाली एवं शुभदा हैं। वे पवित्रों को भी पवित्र करने वाली और मङ्गलमय पदार्थों का भी मङ्गल करने वाली हैं। देखिए यहाँ स्पष्ट उल्लेख है-

"पवित्राणां पवित्रं या मङ्गलानां च मङ्गलम्।
महेश्वरशिरोभ्रष्टा सर्वपापहरा शुभा।।"
(पद्मपुराण-क्रियायोगसार खण्ड)

यही नहीं, जो सैकड़ों योजन दूर से भी 'गङ्गा गङ्गा' ऐसा कहता है,वह सभी कल्मषों मुक्त होकर विष्णुलोक को प्राप्त हो जाता है। गङ्गाजी में स्नान, जलपान और उससे पितरों का तर्पण करने से महापातकों की राशि का प्रतिदिन क्षय होता रहता है। स्पष्ट उल्लेख है कि-

"गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं षस गच्छति।।
स्नानात् पानात् जाह्नव्यां पितृणां च तर्पणात्।
महापातकवृन्दानि क्षयं यान्ति दिने दिने।।"

(पद्मपुराण-क्रियायोगसार खण्ड)

पुनश्च यज्ञ, तप, नाना प्रकार के व्रत तथा पुष्कल दान करने से जीव को जो गति प्राप्त होती है,वही गति उसे गङ्गाजी का सेवन करने से सुलभ होती है। यथा-

"तपोभिर्बहुभिर्यज्ञैर्व्रतैर्नानाविधैस्तथा।
पुरुदानैर्गतिर्या च गङ्गां संसेव्य तां लभेत्।।"

(पद्मपुराण-क्रियायोगसार खण्ड)

गङ्गा के नाम सङ्कीर्तन मात्र से पाप धुल जाते हैं, दर्शन करने पर कल्याण प्रदान करती हैं तथा स्नान करने एवं जलपान करने पर सात पीढ़ियाँ तक पवित्र हो जाती हैं-

"पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।
अवगाहा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम्।।"

(पद्मपुराण-क्रियायोगसार खण्ड)

भगवती गङ्गा भगवान् विष्णु के ही चरणाम्बुजों का दिव्य चरणामृत हैं। शास्त्र भी कहते हैं कि गङ्गा का पवित्र जल सद्यः भगवद्धाम की प्राप्ति कराने में समर्थ है। भगवती गङ्गा के परम पावन जल को साक्षात् ब्रह्मद्रव की सञ्ज्ञा प्राप्त है। बृहन्नारदीय पुराण में वर्णित है कि, **"सतयुग में समस्त तीर्थों, त्रेता में पुष्कर, द्वापर में कुरुक्षेत्र एवं कलियुग में गङ्गा का विशेष महत्व है।"** स्कन्दपुराण के केदार खण्ड में गङ्गाजी के एक सहस्र नामों का उल्लेख है। और उसके अन्त में लिखा है कि जो इस स्तोत्र को प्रतिदिन पढ़ता है,वह पापों से मुक्त होकर शीघ्र ही भगीरथ के समान पुत्र प्राप्त करता है। विद्यार्थी विद्या प्राप्त करके वृहस्पति के समान ज्ञानी हो जाता है-

"नाम्नां सहस्रमाख्यानं गङ्गायाः सर्वकामदम्।

यस्तु वै पठते नित्यं मुक्तभागी भवेन्नरः।।
पुत्रार्थी लभते पुत्रं भागीरथसमं द्रुतं।
विद्यार्थी लभते विद्यां वाचस्पति समो भवेत्।।"

(स्कन्दपुराण, अध्याय-2/158,159)

ब्रह्मवैवर्त पुराण कहता है कि कि गङ्गाजल की एक बूँद से भी यदि मनुष्य छू जाय, तो उसके कोटि-कोटि जन्मों के ब्रह्महत्या जैसे पाप भी तत्क्षण नष्ट हो जाते हैं-

"यत्तोयकणिकास्पर्शः पापिनां च पितामह!
ब्रह्महत्यादिकं पापं कोटिजन्मार्जितं दहेत्!!"

(ब्रह्मवैवर्त पुराण अध्याय-3/21)

बृहन्नारदीय पुराण में कहा गया है कि, **"जो व्यक्ति गङ्गा के पावन जल में स्नान करता है, वह इतना शुद्ध हो जाता है जितना कि सैकड़ों यज्ञों के करने से भी नहीं होता।"** देखिए-

"शुचिभिस्तोयैः स्नातानां गाङ्गेयैः प्रयतात्मनाम्।
व्युष्टिर्भवति या पुंसां न साष क्रतुशतैरपि।।"

(बृहन्नारदीय पुराण अध्याय-5/28)

भगवत्पाद आदि शङ्कराचार्यजी ने अपने गङ्गा स्तोत्र में लिखा है कि, **"जो व्यक्ति गङ्गा के निर्मल जल में स्नान कर उसका पान करता है, उसे यमराज देख नहीं पाता; अर्थात् वह यमलोक में न जाकर वैकुण्ठ में वास करता है।" देखिए-**

"तव जलममलं येन निपीतम्,
परमपदं खलु तेन गृहीतम्।
मातर्गङ्गे! त्वयि यो भक्तः;
किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः।।"

(आदि शङ्कराचार्यकृत गङ्गा स्तोत्र, पद्य-4)

गङ्गा इस पद के अर्थ से ही गङ्गा की पवित्रता सिद्ध हो जाती है। एक बहुत ही प्रचलित उक्ति है- **"नदी वेगेन शुद्ध्यति।"** अर्थात्, नदी अपने प्रवाह से ही शुद्ध हो जाती है। गङ्गा का तो ,अर्थ ही है-गमनशीला। व्याकरणशास्त्र के अनुसार गङ्गा पद कि निष्पत्ति गमनार्थक **गम्लृ** धातु से **गन्गाम्यद्योः (उणादि-1/122)** सूत्र द्वारा **गन्** प्रत्यय, तदनन्तर स्त्रीत्व में **टाप्** प्रत्यय के योग से होती है। इसका व्युत्पत्तिलभ्यअर्थ है- **'गच्छती'ति**

गङ्गा'। तो सतत गमनशीलत्व ही गङ्गा का स्वभाव है। अमरकोश के अनुसार गङ्गा के आठ नाम हैं-

"गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा।
भागीरथी त्रिपुरा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि।।"

(अमरकोष- वारिवर्ग,3)

ममहर्षि वाल्मीकिकृत गङ्गाष्टक स्तोत्र के अन्तिम दो श्लोक में फलश्रुति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि जो नित्य प्रातःकाल इसका पाठ करता है, कलियुग में उसके समस्त पाप धुल जाते हैं और वह सहज ही मुक्ति प्राप्त कर लेता है। उसे बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता है-

"गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते,
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः।
प्रक्षाल्य सोऽत्र :कलिकल्मषपङ्कमाशु;
मोक्ष लभेत् पतति नैव पुनर्भवाब्धौ।।"

(गङ्गाष्टक-**पद्य 9)**

स्वयं राघव-प्रिया जगज्जननी भगवती सीताजी वन-गमन के समय गङ्गाजी से आशीर्वाद प्राप्त करती हैं-

"सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी।
मातु मनोरथ पुरउबि मोरी।।"

(रामचरितमानस अयो. 102/2)

और गङ्गाजी भी अपनी अमोघ वाणी से सीताजी को आशीर्वाद प्रदान करती हैं-

"प्राण नाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ।
पूजिहि सब मन कामना सुजसु रहिहि जग छाइ।।"

(रामचरितमानस, अयो. 103)

वैदिक वाङ्मय में 31 नदियों का उल्लेख है, जिनमें से 25 नदियों का उल्लेख ऋग्वेद में है। इन नदियों में गङ्गा सर्वप्रथम गिनी गयी हैं। देखिए-

"इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वती शुतुद्रि
स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जिकीये
शृणुह्या सुषोमया।।"

(ऋग्वेद- 10.75.5)

एक बहुत ही लोक प्रसिद्ध उक्ति है कि-" जब वृद्धावस्था में शरीर जर्जर और रोगग्रस्त हो जाता है तो, उस समय गङ्गाजल ही सर्वोत्तम औषधि एवं भगवान् नारायण ही सर्वश्रेष्ठ वैद्य होते हैं-

"शरीरे जर्जरीभूते व्याधिग्रस्ते व कलेवरे।
औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः।।"

भगवती गङ्गा नगाधिराज हिमालय की ज्येष्ठ पुत्री हैं। स्वयं वाल्मीकिजी ने राजा भगीरथ से कहा है-

"इयं च दुहिता ज्येष्ठा तव गङ्गा भविष्यति।
त्वत्कृतेन च नाम्नाथ लोके स्थास्यति विश्रुता।।"

(वाल्मीकीय रामायण 1.44.5)

महान् तपस्वी राजा भगीरथ द्वारा गङ्गाजी को पृथ्वी पर अवतरित करना और पुनः उनके माध्यम से राजा सगर के साठ हजार पुत्रों के उद्धार की कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के नवम स्कन्द में वर्णित है। गङ्गा और गायत्री को हमारी संस्कृति का श्वास माना गया है। ये दोनों सर्वपापापहा(सभी पापों को हरने वाली) हैं। देखिए-

"गायत्री जाह्नवी चोभे सर्वपापहरे स्मृते।
एतयोर्भक्तिहीनो यस्तं विद्यात् पतितं द्विजम्।।"

(नारदपुराण- 6/62)

गायत्री को वेदमाता और गङ्गा को लोकमाता कहा गया है। ये दोनों सभी पापों को हरने वाली हैं-

"गायत्री छन्दसां माता माता लोकस्य जाह्नवी।
उभे ते सर्वपापानां नाशकारणतां गते।।"

(नारदपुराण- 6/63)

निष्कर्षत: भगवती गङ्गा पतितपावनी लोक कल्याणकारिणी हैं। अतः हमारा भी यह सहज उत्तरदायित्व है कि हम सुरसरिता भगवती गङ्गा का पवित्रता बनाए रखने के लिए अपना सतत प्रयास करते रहें। यही उनके प्रति हमारी यथार्थ श्रद्धा होगी।

अपने इन्हीं कुछ सारस्वत-सुमनों से भगवती भागीरथी गङ्गा का पूजन करते हुए, उनसे अपनी मानसिक मन्दता को दूर करने की प्रार्थना के साथ ही अपनी लेखनी को विराम देते हैं-

"स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतिराम्बुच्छटा,
मूर्छन्मोहमहर्षि-हर्षविहितस्नानाह्निकाह्नाय वः।
भिद्यादुद्यदुदारदर्दुरदरीदीर्घादरिद्रद्रुम----------;
द्रोहोद्रेकमहोर्मिमेदुरमदा मन्दाकिनी मन्दताम्।।"

Corresponding Author: **डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल**
E-mail: anubaikunth.7375@gmail.com
Received: 11 February,2025; Accepted: 25 February,2025. Available online: 28 February,2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License